

**Index**

|                                                                                                                                    |    |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| 01) A Historical study of the Position of slaves in.....<br><b>Dr. Sangeeta Choudhary, Jharkhand</b>                               | 10 |
| 02) Costing Techniques & Methods: An Important Factor of<br><b>Dr. D.M.Gujarathi—V. G. Gaikwad</b>                                 | 16 |
| 03) Education & Socio-economic Change among the Kaibartas of Bhitorakila village,...<br><b>Ruma Deb Nath—Rupjyoti Dutta, Assam</b> | 25 |
| 04) IMPACT OF OCCUPATIONAL STRESS ON MENTAL HEALTH OF.....<br><b>Ms.Parminder Kaur, Daudhar, Moga</b>                              | 32 |
| 05) Consumption of Indian Media amongst the Indian Diaspora in South Africa<br><b>Ms. Debjani Naskar, Delhi</b>                    | 39 |
| 06) BHAGVAD GITA: INDIAN WAY OF SPRITUALITY<br><b>Dr. Sajni Devi, Dujana (Haryana)</b>                                             | 50 |
| 07) Language & Culture Identity of Tamilsin South Africa<br><b>Jayanthi Ramasamy, New Delhi</b>                                    | 55 |
| 08) Juvenile Recidivism<br><b>Kumari Suresh</b>                                                                                    | 62 |
| 09) THE CONCEPT OF WORLD IN SWAMI VIVEKANANDA<br><b>Dr. Sarita Sinha, Jharkhand.</b>                                               | 64 |
| 10) BESSEL Filter Design: Analysis and Review<br><b>Dr. Satish Chand Singhal, Dausa (Rajasthan)</b>                                | 71 |
| 11) Explanation of Dr.V.Shivanand "Ethnography of Speaking"<br><b>Dr. Bennur Ashokkumar N., Tq: Chincholi Dist: Kalaburagi</b>     | 74 |
| 12) Status of Education VS. Skill-gaps in Indian Market – Call for.....<br><b>Dr. Ashok Kumar, Hazaribagh</b>                      | 75 |

|                                                                                                                                                                        |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <a href="http://www.printingarea.blogspot.com">http://www.printingarea.blogspot.com</a><br><br><a href="http://www.vidyawarta.com/03">http://www.vidyawarta.com/03</a> | <p>13) Job Satisfaction and Reorientation of Education<br/> <b>Dr. Ritu Bhardwaj—Arti Sharma, Rajasthan</b>    79</p> <p>14) Use of RFID Technology in Libraries: An Automated System of Circulation,.....<br/> <b>Vishal Bhaskar, Tappal, Aligarh</b>    84</p> <p>15) Theme of Marriage in 'Roshni'<br/> <b>Dr. Karad Prakash Desai, Tq. Ausa, Dist. Latur</b>    88</p> <p>16) Women and Gender in Local Government<br/> <b>Dr. Sudhir Kumar Rai, Lucknow</b>    92</p> <p>17) A STUDY OF ANXIETY AMONG BOARD STUDENTSIN RESPECT OF GENDER<br/> <b>Bohre Padma—Sharma Gunjan, Raipur</b>    95</p> <p>18) मूल्यशिक्षण:एक चिकित्सक अभ्यास<br/> <b>डॉ. मनिषा मुलकलवार—डॉ. प्रमोद मुलकलवार, यवतमाळ</b>    100</p> <p>19) वृक्षाबाबत खानदेशातील लोकश्रद्धा<br/> <b>प्रा. रमाकांत अंबादास चौधरी, शिरपूर जि. धुळे</b>    105</p> <p>20) मुहम्मदतुघलकांची राजधानी परिवर्तनाची योजना : दौलताबाद<br/> <b>डॉ.एच.आर.चौधरी, शिरपूर जि.धुळे</b>    108</p> <p>21) भारतातील शेतकऱ्यांच्या ऐतिहासिक चळवळी आणि त्यांचे आर्थिक व सामाजिक विश्लेषण<br/> <b>डॉ.विशाल वासुदेवराव मालेकार, कोरपना जि.चंदपूर</b>    110</p> <p>22) मराठी बखर : वाड्यमयीन दृष्टीकोन<br/> <b>प्रा.डॉ. गायकवाड यशवंत जंगलू, जि. उस्मानाबाद</b> ✓    115</p> <p>23) आचार्य अत्रेसाहित्य आणि जीवनधर्म<br/> <b>प्रा. डॉ. किरण नामदेव पिंगळे, पंचवटी, नाशिक</b>    119</p> <p>24) लावण्यवती लावणी<br/> <b>अभिजित राजवर्धन कोसंबी, कोल्हापूर</b>    122</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

आज पर्यंत म्हणजे १९९५ ते २०११ या १६ वर्षांच्या काळात शेतकरी, शेतमजुर, आणि शेती क्षेत्राशी निगडीत जवळपास २ लाख ९० हजार ७४० लोकांनी आत्महत्या केल्याची माहिती नॅशनल क्राइम रेकार्ड ब्युरोने आपल्या वार्षिक अहवालात दिली आहे.<sup>४</sup> शेती क्षेत्रात उद्भवणाऱ्या या गंभीर समस्येचे मुख्य कारण शेतीक्षेत्रातील आदान-प्रदानाच्या किंमतीतील दरी वाढल्याने नफ्याच्या दरात घट होउन कृषीउत्पन्नाच्या मिळकतीचे प्रमाण घटले. याचाच परिणाम म्हणून भारतातील बहुतांश म्हणजे जवळपास ४० टक्के शेतकरी दुसरा चांगला व्यवसाय मिळाल्यास शेतीव्यवसाय सोडण्याच्या मनस्थितीत असल्याचे दिसून येते. ही शेतकर्यांची मानसिकता भांडवलदारांच्या नितिचा जय तर भारतीय शेतकरी चळवळीचा पराजय दर्शविते. हेच भारतीय शेतकरी चळवळीचे आजपर्यंतचे वास्तव आहे असेच म्हणावे लागेल.

#### संदर्भ सुची:-

१. प्रदिप आगलावे 'समाजशास्त्र' वित्तिय आवश्ती—२००१ साईनाथ प्रकाशन नागपूर "सामाजिक चळवळी" प्रकरण पृष्ठ क्र.२५९
२. समाजप्रबोधन पत्रिका:समाजप्रबोधन संस्थेचे प्रकाशन जुलै-डिसेंबर २००९ (महाराष्ट्रातील शेतकरी आत्महत्यांचे विविधांगी वास्तवलेखक ज्ञानदेव वळुले, ओंकार रसाळ)
३. बी.एन सिंह,जनमेजय सिंह "भारतमे सामाजिक आंदोल" रावत पब्लीकेशन जयपूर एव नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष २००५
४. सामाजिक ज्ञान कोश डॉयमंड प्रकाशन वर्ष २००७ खंड तिन
५. <http://maharastratimes.indiatimes.com/article/show/16091370>



## मराठी बखर : वाडःमर्यीन दृष्टीकोन

प्रा.डॉ. गायकवाड यशवंत जंगलू

शंकरराव पाटील महाविद्यालय भूम, ता. भूम, जि. उर्मानाबाद

**प्रास्ताविक :** बखर वाडःमर्य हा महाराष्ट्राच्या इतिहासाचा आणि संस्कृतीचा अमोल ठेवा आहे. मराठयांचा इतिहास, त्यांची जीवननिष्ठा, श्रद्धा यांचे चित्रण त्यात आलेले आहे. मराठीतील पहिली बखर म्हणून जिचा उल्लेख केला जातो. त्या "महा बखरीचा" कांही भाग इ.सन 1378 मध्ये रचलेला असला तरी शिवकाल आणि पेशवेकाळ हाच बखर वाडःमर्य प्रकार बहराला येण्याचा व प्रकट होण्याचा काळ राहिलेला आहे. चिटणीस, कार्कून वगैरे मंडळीनी मुसलमानांचे तवारिख, शाहनामे, फेरिस्ते वगैरे इतिहास साधनांचे पुढे ठेवूनच मराठी बखरी लिहिल्या गेल्या आहेत. "बक" म्हणजे बोलणे याच धातूपासून बखर हा शब्द मराठी निपजला आहे. "बखर" हा मराठी साहित्य प्रकार फारसी तवारिखा, शाहनामे, अख्यबार इ. साहित्यानिशी सदृश्य आहे. "बखर" हा प्राचीन मराठीतील एक विविधत गद्य लेखन प्रकार यात चरित्र, वंशावळी, युद्धवर्णने, कैफियत, करीना, आत्मवृत्त इ. चा समावेश होतो.

"बखर" हे नाव स्वतः लेखकांनी दिले आहे की, संशोधन-संपादकांनी दिले हे निश्चित सांगणे कठीण आहे. पण याच प्रकरच्या लेखनाला "बखर" म्हणून संबोधले जात असावे असे दिसते. कारण ग्रॅंट डफने मराठ्यांचा इतिहास लिहिण्यासाठी आवश्यक ती साधने मिळावी म्हणून जो जाहिरनामा काढला होता. त्यात "बखर" हा शब्द यापरला आहे. सातारचे छत्रपती प्रतापसिंह आणि ग्रॅंट डफ यांच्यात कागदपत्रांच्या देण्या- घेण्या संदर्भात जी बोलणी व जो पत्राव्यवहार झाला त्यातही "बखर" हाच शब्द यापरला आहे.

**बखर :** व्युत्पत्ती मीमांसा : "बखर" शब्दाचा अर्थ आणि व्युत्पत्ती यासंबंधी आजवर अनेक विद्वानांनी आपली मते मांडलेली आहेत. बखर लेखनाचा आशय महाराष्ट्राच्या इतिहासाशी संलग्न आहे. परंतु इतिहासाशी संबंधित असणारे सर्वच लेखन साहित्य हे बखर सदरात समाविष्ट करता येत नाही. "बखर" शब्दाचा अर्थ हकिकत,

बातमी, इतिहास, चरित्र असा शब्दकोशात आढळतो हा शब्द खबर या फारशी शब्दापासून वर्णविपर्यासाने आला असाया. असे कांही विचारवंताचे मत आहे. बखरी या काळात लिहिल्या गेल्या त्या काळात मराठी भाषेवर फारशी भोजेचा प्रभाव असलेला दिसून येते. "राजवाडे" यांचा मते "बक" म्हणजे बोलणे या शब्दापासन "बखर" हा शब्द मराठीत आला असाया. ते असेही म्हणतात की, "खबर" या फारशी शब्दाचा अर्थ "न्युज" असा आहे. बखर या मराठी शब्दाचा "इतिहास कहाणी" असा अर्थ आहे.

बखरीची व्याख्या मोत्सवर्थ यांनी "Any History narration memoir and chrohnicle in prakrit prose" अशी केली आहे. तर मेजर कॅडी यांनी बखरी बद्दल "A written narrative or history on prakrit prose" असा विचार मांडला आहे.

"बखर" या शब्दाचा रुढ अर्थ "राजकीय स्वरूपाचे ऐतिहासिक लेखन" असा आहे. गद्यातील इतिहास असेही त्याचे स्वरूप असू शकते. मुस्लिम समाजात "तवारिखा" लिहिण्याची पद्धत होती. म्हणून मुस्लिमानांच्या सहवासाने त्यांच्या "तवारिखा" पाहून मराठ्यानांनी "बखरी" लिहिण्याची प्रथा सुरु केली. एकंदरीत इतिहासाचे वृत्तकथनाच्या गरजेतून बखर वाढःमयाची निर्मिती झाली.

मराठी वाढःमयाच्या इतिहासात बखर वाढःमय फार महत्वाचे आहे. इतिहास आणि ललित साहित्य यांचे मिश्रण असणारा वैशिष्ट्यपूर्ण लेखन प्रकार म्हणजे बखर, इतिहासातील घटनांचा वस्तुनिष्ठ पण तपशीलवार असा कलात्मक आणि सौदर्यपूर्ण अविष्कार म्हणजे बखर होय. राजकीय क्षेत्रात संपर्काच्या निमित्ताने लिहिलेली ऐतिहासिक कागदपत्रे हा त्यानंतरच्या काळातील प्राचीन मराठी गद्याचा ठेवा होय. त्यासोबतच मराठी बखर वाढःमयाचीही निर्मिती होती. लेखनातील मराठी मोठेपणा, भाषचा खानदानीपणा आणि शैलीदार लेखन यामुळे बखर हा प्राचीन मराठीतील अस्सल देशी बाज आहे. असे म्हटले पाहिजे.

मराठेशाहीच्या उदयाबरोबर बखर वाढःमयाने लक्षणीय रूप धारण केले आणि पेशवाईत तो प्रकार समृद्ध झाला. काळाबरोबर याला उतरती कला ही लागली. साहित्य हे समाजाचे अपत्य असते असे म्हणतात, ते बखरीलाही लागू पडते, मराठी राज्य व त्यातील राजकीय घडामोडी हिच बखरीच्या लेखनामागील प्रेरणा आहे. असे म्हणता येईल. या घडामोडीच्या "हकिकती लिहणे" हेच मुख्य प्रयोजन बखरी लिहिण्याच्या मागे होते.

ऐतिहासिक कले पेक्षा वाढःमयीन सौदर्याच्या साक्षात्कार बघ्यर वाढःमयाच्यारे होतो. म्हणून बखर वाढःमय म्हणजे मराठेशाहीच्या तेजस्यी परक्रमाचे नंदादीपच होते.

बखरीचे ऐतिहासिक महत्व : समक्ष अवलोकन करून ये ऐतिहासिक कागदपत्राच्या नोंदी यांच्या सहाय्याने बखरकराने केलेले लेखन वृत्तकथन म्हणून ग्राह मानता येईल. स्थल काल, व्यक्ति विपर्यास, प्रसंगकारण विपर्यास, कलिपकता, दंत कथा, अद्भूता, संदिग्धता यामुळे ऐतिहासिक सत्याला अनेकवेळा बाधा येते. परंतु बखरीत पूर्ण सत्याचा अभाव असतो. असे मात्र म्हणता येणार नाही. सत्यशोधन आणि चिकित्सा ही बखरकराची भूमिका नसते. तर बघ्यरकार आश्रित असल्याने धन्याचा गौरव स्वामिनिष्ठा व्यक्त करण्याचा प्रयत्न बघ्यरकाराचा असतो.

प्राचीन मराठी गद्य वाढःमयाच्या इतिहासात स्वतंत्र वाढःमय प्रकार म्हणून बखरीचा उल्लेख केला जातो. वेगळा विषय आणि वेगळी लेखन पद्धतीमुळे हा लेखन प्रकार वैशिष्ट्यपूर्ण ठरतो. बखरकार हा कलाकार आहे. त्याला बखरीचे केवळ नोंदवजा लेखन करावयाचे नसून ती सजवायाची आहे. एक वाढःमयीन कलाकृती म्हणून यात नाट्यात्मकता साकारली जाते हे बखर लेखनाचे एक सामर्थ्यच आहे. बखरीची रेखीव रचना कल्पनाचातुर्य, निवेदन कौषल्ये ही बखरीची वैशिष्ट्ये आहेत. व्यक्तिदर्शन, वर्णन पद्धती, रसपरिपोष आणि भाषाशैली या वाढःमयीन गुण वैशिष्ट्याकडे लक्ष ठेवून लेखन केल्यामुळे हे ऐतिहासिक लेखन आकर्षक आणि मनोरंजक झाले आहे. प्रौढ व रसाळ भाषा, संस्कृत व फारशी भाषेतील पौराणिक दाखले, अलंकार, सुभाषित, वाक्प्रचार, म्हणी यांचा वापर, दंत कथा-आख्यायिकांचा आश्रय, सैन्य, कोट, दुर्ग यांची जमाखर्चाची दिलेली माहिती कधी प्रसंग निर्मितीसाठी लहान लहान व सुट्सुटीत वाक्य तर कधी तपशीलवार निवेदनासाठी लांबलचक व शिथील वाक्यरचना निवेदनात कधी आटोपशीरपणा, असे या लेखन शैलीचे स्वरूप आहे. बखरीतील भाष ही साधी-गद्य नीरस नुसतीच निर्जीव वर्णन करणारी लिलतंतर साहित्याची भाषा नाही. तर ती जीवंत रसरसीत आणि मनोहर अशा वाढःमयीन मूर्तीचे दर्शन देणारी ललित वाढःमयीन भाषा आहे.

बखरीचे वाढःमयीन मूल्य : बखरीचे वाचन करीत असताना असतांना आपणास ललित साहित्यातून मिळणारा आनंद मिळतो. म्हणून वाढःमयीन दृष्टीने बेखरीचे मूल्यमापन करणे गरजेचे ठरते. ऐतिहासिक घटना प्रसंगाचा वाढःमयीन पातळीवर वाचकाना मनमुराद आनंद घेता यावा अशीही त्यांची दुय्यम धारणा होती.

साहित्यात जसं विशिष्य रसांचे कोंब ओसेडून पाहतात. तरे बखरीतीही शुगार रस सोडून याकी सारे रस हजेरी लावताना दिसतात. साहित्यात जसे व्यक्तिच्या माझ्यामातून समाज आणि संस्कृतीचे चित्रण, दर्शन किंवा चित्रन इतातेने असते. तशाच प्रकारचे चित्रण बखरीतून ही आलेले असते. साहित्य वाचनातून जो वाडःमयीन आनंद प्राप्त होतो. तोच आनंद बखरीच्या वाचनानेही मिळू शकतो. म्हणून बखर वाडःमयात्ता ललित वाडःमयात समाविष्ट करणे चुक नाही. विश्व आणि लेखनाची पद्धती यामुळे बखरकारीस एक स्वतंत्र वाडःमय प्रकारचे मूल्य प्राप्त आहे. बखरकार हा एक कलावंत आहे. बखरकाराता केवळ बखर लिहावयाची नाही. तर ती सजवायची आहे. सजविणे या शब्द प्रयोगातून बखरकाराची सैदैर्यदृष्टी स्पष्ट होते. बखरकार जसा कलावंत आहे. तसाच तो कथनकार सुधा आहे. प्रत्यक्ष पाहिलेल्या आणि ऐकलेल्या प्रसंगाच्या व्यक्तिच्या वर्णनाशी तो एकरूप होतो. त्यात आपल्या कल्पनाचे रंग भरतो. हे रंग इतके गहिरे असतात की, तो प्रसंग आणि ती व्यक्ति आपल्यापुढे साक्षात उभी राहते. बखरकाराच्या निवेदनाला रंग रूप आणि आकार प्राप्त होऊन त्यातून सुंदर वाडःमयीन मुर्ती निर्माण होते. खरे तर कथानिवेदन हा बखर वाडःमयाचा महत्वाचा विशेष आहे. त्यासाठी कथावस्तुची आकर्षक पद्धतीने केलेली रचना-मांडणी हे या कथा निवेदनामागील सुत्र आहे. बखरकार इतिहासातील घटकांची नुसती गोळा बेरीज करीत नाही. तो त्यांची संगती लावतो. संगती लावताना कथा वस्तुची रचना करतो. व्यक्तिचा आणि घटना-प्रसंगाचा रुपबंध येतो. त्यांच कार्यकारण भावाने संबंध जोडतो. आपली कथा श्रेत्रांनी अवधान देऊन ऐकावी, वाचकांनी पुढे-पुढे वाचत जावे यासाठी उत्कंठा आणि विस्मय सतत जागते ठेवावे लागते. बखरकारांनी हे काम कौशल्याने केलेले आहे. याचे उत्कृष्ट उदा. म्हणून बखरीचा आशय मराठांचा इतिहास तर अभिव्यक्ती वाडःमयीन आहे.

महिकावतीच्या बखरीचे वाडःमयीन रूप प्रत्यक्तारी आहे. व्यक्तिदर्शन, युद्ध प्रसंगवर्णन, कथाप्रयाहाची, निवेदनशैली, सुत्रबद्ध तशीच प्रौढ भाषा शैली आणि वीररसांचा उत्कृष्ट अविष्कार या वाडःमयीन वैशिष्ट्यांनी ही बखर नटलेली आहे. बखरीमध्ये कांही ठळक वाडःमयीन गृण आढळतात ते पुढील प्रमाणे:-

1. वर्णन पद्धती किंवा वर्णन विषयाशी तादात्यः- बखरीचा वर्णनपद्धती या घटकात व्यक्ति वर्णन, स्थलवर्णन, युद्ध वर्णन रसअविष्कार इत्यादी उपघटक येतात. व्यक्ती वर्णनात बखरीने आपली एक स्वतंत्र वर्णन शैली निर्मित केली आहे. यात परंपरा साहचर्य, अल्पाक्षर, रसणीयता, तर स्थलवर्णनात परंपरा साहचर्य, चेतना गुणोक्ती, अल्पाक्षररमणीयता, युद्धवर्णनात, परंपरा साहचर्य,

निर्माण प्रतिमाने, गतिमानता इ. घटकांचा परिपोष होतो. रस अविष्कारामध्ये बखरीने वीररसाचा परमोक्तर्व साथला आहे. वीर रसाबरोबरच बखरकारांनी करूण, अद्भूत, दीभत्त, रौद्र, यत्तल या रसांचाही कमी अधिक प्रमाणात अविष्कार केला आहे.

ज्या विषयाचे आपणास वर्णन करावयाचे आहे. त्याच्याशी एकरूप इत्याविषय कोणतेही लेखन जिवंत होत नाही किंवा परिणामकारक होत नाही. बखरकारही आपल्या प्रतिपद्यविषयाशी एकरूप इतातेले दिसतात. बखरकाराच्या अभिमानाचा विषयक असल्यामुळे तो त्यांनी अत्यंत जिव्हाल्याने चित्रीत केलेला दिसतो.

2. संवादलेखन : बखरीच्या निवेदन शैलीत संवादलेखन महत्वाचे आहे. हा घटक बखरीना कलात्मक पातळीवर घेऊन जातो. बखरीतील संवाद लेखनामुळे कथा निवेदन एकसुरी अथवा चाकीरीबद्द होत नाही. व्यक्ति आणि घटना प्रसंग जिवंत होतात. व्यक्तिचे स्वभावविशेष आणि भावभावना प्रकट होतात. इतिहासातील प्रसंग एखाद्या चलचित्रपटासारख्या वाचकाच्या डोळ्या समोरून सरकू लागतो आणि कथानककराच्या निवेदनात गतिमानता, नाट्यात्मकताही निर्माण होते. बखरीनी नाट्यरसिकांची 'भूक' बखरीतील संवादलेखनाने कांही अंशी भागविली आहे. हे नाकारात येत नाही. बखरीतील नाट्यमयता स्वभाव परिपोष, वातावरण निर्मिती, संघर्ष इ. गुणांनी संवादलेखनामुळे इकाळी येते. म्हणूनच नाट्य लेखनाचे सर्व गुणमर्ध बखरीमधील संवादलेखनात सामावलेले आहेत.

जेथे एकरूपता येते तेथे निवेदनात सुधा प्रामाणिकपण येतच असतो. प्रमाणिकतेमुळे बखरीत रसोत्कटता हा आणखी एक वाडःमयीन गुण दिसून येतो. बखरकारांनी केलेल्या शैर्याच्या वर्णनात प्रामाणिकपणा आहे. त्यामुळे यातून भरपूर प्रमाणात वीररसप्रधान निर्मिती साथता आली आहे.

3. रचनातंत्र कौशल्या :- बखरकाराचे निवेदन कौशल्यापूर्ण आहे. तसेच त्यांची कथानक रचना आणि प्रसंग निर्मिती ही कौशल्यापूर्ण आहे. कथा वस्तुची त्यांनी केलेली मांडणी मोठी कलात्मक आहे. म्हणूनच एखाद्या उत्कृष्ट, ललित कथे प्रमाणे प्रारंभापासून पासून अखेर पर्यंत वाचकांच्या मनात उत्कृष्ट व विस्मय निर्माण करून वाचकांच्या चित्रवृत्ती तलेख करण्याचे सामर्थ्य बखरकारांच्या या लेखनातून दिसून येते.

4. भाषा शैली :- बखर वाडःमयाच्या भाषाशैलीचे आशय आणि अभिव्यक्त या दृष्टीने कांही गुणधर्म आहेत ते गुणधर्म बखर वाडःमय की इतिहास या दृष्टीने पाहता येतात. इतिहासाची भाषा



आणि बखरीची भाषा यात मूलतःच भेद आहेत. इतिहासाची भाषा बुद्धीनिष्ठ असते. तर वाडःमयाची भाषा ही भावगम्भ असते. म्हणूनच ती वेगवेगळ्या अनुभव विश्वाची निर्मिती करणारी असते. बखर वाडःमयाची भाषा ही साधी, गद्य, निरस, नुसरीच निंजिवर्णन करणारी ललितंतर साहित्याची भाषा नाही. बखरीची भाषा शैली वाडःमय गुणाच्या दृष्टीने सरस आहे. कथेची गतिमानता सलग राहावी यासाठी आलेली लहान लहान वाक्य प्रासादात्मकशैली ही लोक कथांच्या जवळची आहे. बखरीची भाषाशैली हे तिचे खास आकर्षण आहे आणि तेच तिचे एक वाडमयीन अंगही मानले जाते. बखरीची भाषा शैली ही बीच अर्थवाहक आहे. बखरीतील भाषा शैलीमुळे लेखकाच्या भाषा प्रभुत्वाची ही कल्पना येते. बखरकारच्या अंतःकरणातून सौदर्यदृष्टी सहदयता कलात्मक गोष्टीची ओळखही बखरकाराच्या अंतःकरणातून निर्माण झालेली आहे.

**5. विलोम पद्धतीचा वापर :** बखरकार विलोम पद्धतीचा वापर करतात. म्हणून त्यांच्यावर काल विर्यासाचा आरोप होतो. यात कालानुक्रमाने निवेदन येत नाही. बखरकार हे घटना मागे-पुढे करतात परंतु कथारचने मार्गील विलोम पद्धतीचे स्थान लक्षात घेता. कथानकातील उत्कटता वाढविण्यासाठी हा खटाटोप ते करतात यादृष्टीने भाऊसाहेबांची बखर, शाहु महाराजांची बखर होळकरांची कैफियत इ. बखरी या महत्वपूर्ण आहेत.

**6. ओजोगूण किंव प्रसाद :** बखरीत प्रसाद या गुणा बरोबर ओज आणि माधुर्य त्याला पूरक उरणारे गुणही त्यात आढळतात. स्वकियांचे शौर्य, धैर्य तसेच त्यांच्या सात्यिक आणि स्वाभिमानीबाणा इ. गुणाचे वर्णन करतांना बखरकारांचा आवेश फुलून आलेला दिसतो. वेचक शब्द रचनेमुळे बखरीत या गुणांचा सहजपणे झालेला आहे. आवेश, प्रसाद व माधुर्य या त्रिगुणामुळे बखरीना वाडःमयीन तेज लाभले आहे.

**7. व्यक्तिवर्णन :-** व्यक्तिवर्णन हा सभासद बखरीचा वाडःमयीन गुण आहे.उदा. "बाजी पासलकर महायोद्धा त्याच्या मिशा दंडा एवढ्या....." या वाक्यात पासलकरांचे मोजक्या शब्दात शब्दचित्र उभे केले आहे. तर "अफजल खान सामान्य नव्हे, केवळ दुर्योधनच जातीने होता" या दुसऱ्या वाक्यात अफजल खानाची दुष्टवृत्ती, अहंकार दुर्योधनाच्या रूपकातून सांगितले आहे. छोटी छोटी वाक्य, सुबोधता, सुगमता ही या वर्णन शैलीची वैशिष्ट्ये आहेत.

**समारोप :-** बखरीनी इतिहास पेक्षा वाडःमयीन गुण फार जोपासले आहेत. त्यामुळेच एक आगळा वेगळा आणि स्वतंत्र वाडःमय प्रकार म्हणून विशेष महत्व मिळावे. बखरीचे विषय आणि मांडणी

वाडःमयीन दृष्ट्या आकर्षक आहे. बखरकार हे बहुश्रुत आणि न्यासंगी होते. महाराष्ट्रीयन माणसाचा स्वभाव त्यांच्या भाव भावना आणि त्यांचे कांही खास वृत्तीयशेष, बखर वाडःमयात आत्यामुळे बखरीतील व्यक्तिचित्रे ही महाराष्ट्रीय माणसाची प्रतिनिधिक रूपे ठरतात. मराठी बखरीनेच मराठी गद्याला वैभवशाली आणि अभिमानस्पद वर्ळन लावले आणि इतिहास य वाडःमय यांच्या सुरेख संगम साधून तिने आपले वेगळेपण कायम ठेवले.

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. मराठी वाडःमय कोश- खंड चौथा संपा. विजया राजाध्यक्ष
2. मध्ययुगीन वाडःमयीन प्रवाह MAR 251 य.च.म.मु. विद्यापीठ नाशीक
3. प्राचीन म.वा. इतिहास- भाग सात - डॉ. देशपांडे अ.ना. विनस प्रकाशन पुणे.
4. प्राचीन मराठी वाडःमयाचे स्वरूप- प्रा.शेणोलीकर ह.श्री. मोघे प्रकाशन
5. बखर वाडःमय उद्गम आणि विकास- प्रा.डॉ. संकपाळ बापूजी, दास्ताने रामचंद्र आणि कंपनी पुणे.
6. मराठी बखर गद्य- ग्रामोपाये ग.ब.
7. मराठी बखर - हेरवाडकर र.वि.
8. ऐतिहासिक पत्रबोध -सरदेसाई गो.स.

